ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 115-116
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

बढ़ती जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा

डॉ0 अमर नाथ
प्रवक्ता– अर्थशास्त्र विभाग, जनता इन्टर कॉलेज, अम्बारी–आजमगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received-16.07.2022, Revised-22.07.2022, Accepted-26.07.2022 E-mail: amarnathbind@gmail.com

सारांश: – विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि 20–30 लाख वर्ष पूर्व इस धरा पर मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ। प्रारम्भ से लेकर 1830 तक विश्व की कुल जनसंख्या 1 अरब थी और 1930 तक यह बढ़कर दुगनी हो गयी। अर्थात जितनी वृद्धि लाखों वर्षों में जनसंख्या में हुई उतनी वृद्धि मात्र 100 वर्षों में ही हो गयी। जनसंख्या की यह वृद्धि और तीव्र हुई और अगली 1 अरब की वृद्धि मात्र 30 वर्षों में ही हो गयी। इसके बाद अगले 15 वर्षों में ही 1 अरब की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 1960 में 3 अरब हो गयी। 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या बढ़कर 5 अरब हो गयी। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र की 'वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्टस 2015' के अनुसार वर्तमान समय में 7.2 अरब नर–नारी इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। 2050 तक विश्व की जनसंख्या 9.6 अरब हो जाएगी स 2011 की जनगणना के अनुसार भारत 121.08 करोड़ जनसंख्या के साथ दुसरे स्थान पर है। 'वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्टस, 2015 की रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट है कि 2028 तक भारत जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़कर प्रथम स्थान पर आ जायेगा।

कुंजीभूत शब्द– अनुमान, प्रादुर्भाव, जनसंख्या, तीव्र, उपलक्ष्य, प्रतिवर्ष, जनसंख्या दिवस, वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्टस।

विश्व की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की दृष्टि से देखा जाय तो वर्तमान में विश्व विकास के कई कीर्तिमान तैयार किये, लेकिन उनके पेट भर भोजन और पानी की दृष्टि से देखा जाय तो वह अभी काफी पीछे है। मूलभूत सुविधाओं की बात छोड़ दें तो क्या हम उन्हें पेटभर भोजन उपलब्ध करा पा रहे हैं। विश्व में भूख से पीड़ित लोगों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। पिछड़े और गरीब देशों में लाखों लोग समुचित खाद्यान्न की व्यवस्था कर पाने में असमर्थ हैं। विश्व की स्वयंसेवी संस्थाओ से भी अतिरिक्त खाद्यान्न की व्यवस्था कर पाने में असमर्थ हैं, क्योंकि ये अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य संस्थाएं भी स्वयं इसी संकट के दौर से गुजर रही हैं। वर्ष 2007 के बाद से खाद्यान्न के मूल्यों में 40–55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और भूख से पीड़ित लोगों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार वर्तमान में दुनिया के 37 से अधिक देश अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य सहायता पर निर्भर हैं।

खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक जोशग्रेजियनों डी सिल्वा ने विश्व खाद्य समस्या पर चर्चा करते हुए मत व्यक्त किया था कि खाद्य उत्पादन में आ रही कमी और बढ़ते हुए मूल्यों के कारण खाद्य संकट और गहराएगा तथा कई देशों में भोजन के लिए संघर्ष और हिंसक हो सकता है। जहाँ सहारा के देशों में भयंकर अकाल के कारण लाखों लोग भोजन की तलाश में पडोसी एवं अन्य देशों में पलायन कर रहे हैं, वहीं कई विकसित देशों में खाने योग्य अनाज को सड़ाकर समुद्र में फेंक दिया जा रहा है। विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन की योजनाओं की रूपरेखा पर दृष्टिपात करें तो खाद्य सम्बन्धी मामले में सरकारी महत्वाकांक्षा का तो पता चलता है, लेकिन मौजूदा सरकारी मशीनरी की वास्तविकता एवं गहराते खाद्य संकट की चुनौतियों को देखकर ऐसा नहीं लगता है कि वैश्विक स्तर पर सरकारें उससे निपटने के लिए कमर कसी हैं।

खाद्य सुरक्षा का अर्थ है सभी लोगों को सभी समयों में पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न (भोजन) उपलब्ध कराना, ताकि वे सक्रिय एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि समग्र स्तर पर खाद्यान्नो की पर्याप्त उपलब्धता के साथ लोगों के पास पर्याप्त मात्रा में क्रय–शक्ति भी हो जिससे कि वे आवश्यकतानुसार खाद्यान्न क्रय कर सकें। खाद्य सुरक्षा सामान्य जनमानस में आशावादी स्थिति मुहैया कराती है इधर पिछले तीन–चार दशकों में जहाँ जादातर लोगों को खाद्य सुरक्षा के दायरे में लाया गया है, वहीं सरकारी नीतियों और उपेक्षाओं के कारण इसको कम महत्व दिया गया है। वैश्विक स्तर पर जहाँ भूख और कुपोषण से ग्रस्त हैं, जलवायु परिवर्तन की प्रतिकूल परिस्थितियों के दंश को झेल रहे हैं, वहीं विकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार के देशों में अलग–अलग कारणों से खाद्यान्न और उसके उत्पादन की प्रक्रिया में संसाधनों की अत्यधिक बर्बादी हो रही है। यदि बर्बाद हो रहे अन्न की मात्रा में कमी कर उसको जरुरत मंद तक पहुँचाया जाये तो भूख और कुपोषण ग्रसित लोगों की खाद्य असुरक्षा को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं ने खाद्य उत्पाद पर प्रभाव डाला जिसका कुप्रभाव लोगों की पेट पर पड़ता है और खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। 2050 तक इस धरा पर जितनी जनसंख्या होगी उसके लिए वर्तमान की तुलना में 70 प्रतिशत अधिक भोजन की आवश्यकता होगी। कृषि विशेषज्ञों का मत है कि जलवायु परिवर्तन के कारण

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न उत्पादन में 20 प्रतिशत की कमी हो सकती है जबकि वर्तमान समय में ही ऐसे लोगों की संख्या अधिक है जिनको की भर पेट भोजन उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। ऐसे में आने वाले समय में खाद्य समस्या और विकट रूप धारण कर सकती है। आज दुनिया भर में करीब 81.1 करोड़ जनसंख्या भूखे सोते हैं तो ऐसे में खाद्य सुरक्षा पर सवालिया निशान उठना स्वभाविक है।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार 2019 के बाद भूख की समस्या बड़ी तेजी से बढ़ी है। प्रतिदिन 25000 से अधिक लोग भूख और उससे सम्बन्धित समस्या से ग्रसित होकर असमय काल के गाल में समां जाते हैं। 10000 से अधिक बच्चों की प्रतिदिन भूख जनित बीमारी के कारण मृत्यु हो रही है। जहाँ तक भारत के सन्दर्भ में बात की जाती है यहाँ पर प्रतिदिन करीब 3000 बच्चों की मृत्यु भूख और उससे सम्बंधित समस्याओं से होती है। देश में करीब 20 करोड़ से अधिक लोगों को एक समय खाली पेट सोना पड़ता है। यह केवल भारत की ही बात नहीं है वरन् पुरे विश्व के 45 से अधिक देशों में 5 करोड़ से अधिक लोग किसी न किसी रूप से भोजन के अभाव में जीते है। दुखद् यह है कि विश्व में करीब 2.5 अरब टन खाद्यान्न ख़राब हो जाते हैं, इसका करीब 30 प्रतिशत हिस्सा अकेले भारत का है जो कि चिन्ता का विषय है। आने वाले समय में हमें ऐसी रणनीति बनानी होगी जिससे कि 2050 तक की बड़ी जनसंख्या के लिए समुचित भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

बढ़ते वैश्विक तापन एवं जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून प्रभावित हो रहा है। मानसूनी बारिश के अभाव में अन्नदाता सूखे की आशंका से घबराये हुए है। ऐसी स्थिति में वे खेतों की बुवाई नहीं करते है और इससे उत्पादन में और कमी होने की प्रबल संभावना होती है। ऐसी दशा में देश और समाज को दो तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पहली समस्या अनाज के कीमत से वृद्धि की होती है जिसका सर्वाधिक प्रभाव समाज के गरीब और वंचित वर्ग पर पड़ता है और वे अपने भोजन की व्यवस्था नहीं कर पाते है। दूसरी समस्या यह होती है कि सरकार गरीब और वंचित वर्ग को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए जब खाद्यान्न की व्यवस्था करती है तो बढ़ी हुई कीमत के कारण राजकोष पर भार अधिक बढ़ जाता है। कम्पन्नियों और बाजार के गठजोड़ के कारण हमारी प्राकृतिक खाद्य व्यवस्था समाप्त हो रही है और हम उनके जाल में फसते जा रहे हैं जोकि चिन्ता का विषय है। खाद्यान्न की बढ़ती हुई कीमत ने खाद्य संकट को और अधिक बढ़ा दिया है। देश का एक बड़ा श्रमजीवी वर्ग जीवन निर्वाह के लिए खाद्यान्न पर निर्भर है। इस वर्ग के लिए खाद्यान्न की मांग बेलोचदार है। व्यापारी वर्ग बढ़ती कीमत के कारण खाद्यान्न की जमाखोरी अपने मुनाफे को बढ़ाने के उद्देश्य से करते हैं। ऐसे में खाद्यान्न की कीमत में और तेजी से वृद्धि होती है और गरीब वर्ग के लोगों की वास्तविक आय और कम हो जाती है जिसके कारण उनको अपने खाद्यान्न की मांग को और कम करना पड़ता है।

इस तरह से बढ़ती हुई जनसंख्या ने अपने आप को कई संकटों में डाल दिया है। यह सच है कि यदि वर्तमान में सबको त्याग दे तो भी यह समस्या अगले 50 वर्षों तक समस्या ऐसी ही बनी रह सकती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मनुष्य ने जिस तरह से प्रकृति और पृथ्वी को नाकारा है, आने वाले समय में शायद ही वह हमें क्षमा करे। इसके लिए एक मत होकर हम बढ़ती हुई आबादी को तेजी से नियंत्रित करना होगा तो दूसरी तरफ हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने के साथ ही आने वाले संकट के प्रति हमें गंभीर होना होगा। हमारे पास समय कम होने के कारण इसकी शुरुआत कृषि से ही करना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण का अर्थव्यवस्था अतिरिक्तांक 2021.
2. मिश्रा एवं पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2019.
3. योजना पत्रिका 2012.
4. R Radhakrishna, ' Food and Security Nutrition of the Poor' Economic and Political Weekly 3 April 2005.
5. P. V. Srinivasan, " Agriculture and Food Security " in Shovan Ray (Ed), Hand Book of Agriculture in India (New Delhi 2007).

*****